Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मैथिली उपन्यासपर अन्य साहित्यक प्रभाव एवं महत्त्व

देवेश झा
व्याख्याता, नेशनल डिग्री कॉलेज, रामबाग, पूर्णिया, बिहार, भारत

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 119-123

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 June 2022

मैथिली मे उपन्यास विधा :–
आजुक ग्लोबल–गाम कँ देखैत छी तऽ बुझना जाइत अछि जे एहि गाम मे अनगिनत भाषा–भाषी लोक सभ बास करैत छथि जनिक भाषा अनेको प्रकारक अछि। एहि भाषा सभ मे किछु भाषा सभ कँ ध्यान सँ सुनला पर किछु वाक्य वा वाक्यांश बुझना मे आबि जाइत अछि। जे बात बुझबा मे आबैत अछि, से अपन भाषाक सामिप्य रहलाक कारणँ आ ओहने भाषा बुझबा मे नहि आबैत अछि जे ज्ञात भाषा सँ वा भाषा–परिवार सँ दूर अछि।
संसारक प्रायः सभ भाषाक अपन एक टा क्षेत्र निर्धारित अछि आ मिथिलाक भाषा मैथिलीक सेहो क्षेत्र निर्धारित अछि। एहि विषय मे विदेशी विद्वान 'कोलब्रुक' सभ सँ पहिने अपन विचार प्रस्तुत कयने छलाह। हिनक मतक बादे लोक जानि सकल जे मैथिली एक टा भाषा अछि जे भारतक बिहार–झारखंड राज्यक विभिन्न जिला सभ मे आ नेपालक विभिन्न जिला सभ मे बाजल जाइत छैक।

प्राचीन काल मे मिथिला मे संस्कृत भाषाक वर्चस्व छलैक जाहि सँ मिथिलावासी लोकनि संस्कृत मे रचना करब, अपन परम कर्त्तव्य बुझैत छलाह आ संस्कृत मे काव्यक रचना करैत छलाह जाहि सँ मिथिलाक जन–जनक भाषा मैथिली मे रचना नहि भऽ सकल छल। जखन मैथिली भाषा मे लिखल पोथी सभक अध्ययन करैत छी तखन पाबैत छी जे मैथिलीक प्रथम गद्य–ग्रंथ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक रचल 'वर्णरत्नाकर' अछि आ एहि मे विभिन्न विषय पर रोचकताक संग वर्णन प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'वर्णरत्नाकर'क बाद कोनो ग्रंथ मैथिलीक उपलब्ध नहि होइत अछि। बहुत बाद मे आबि कऽ मैथिली भाषाक प्रयोग संस्कृत नाटक सभ मे गीतक रुप मे होइत देखबा मे आबैत अछि। विद्यापति उच्च कोटिक लेखक छलाह मुदा गद्य लिखलाह संस्कृत–अवहट्ठ मे। मैथिली भाषा मे एकछाहा काव्यक रचना करैत छलाह।

"मैथिली साहित्यमे गद्यक क्रमबद्ध विकास उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ आरम्भ भेल, से आब शत–शत शाखा–प्रशाखामे पल्लवित–पुष्पित भए रहल अछि। मिथिलाक अगणित संवेदनशील साहित्यकारलोकनि अपन अपन रचना द्वारा अपन मातृभाषाकँ गौरव प्रदान करबामे प्रवृत्त छथि। पहिने लोकक मातृभाषा दिशि अनादर दृष्टि छलैक। बड़ बेशी तँ पण्डितलोकनि गेय पदक रचनाटा करैत छलाह। चन्दाझा अपन 'पुरुषपरीक्षा'क भूमिकामे लिखने छथि – **'भाषामे अनादर बुद्धि मिथिला के विद्वान करते थे।**' अतः जखन अंग्रेजी शिक्षाक आरम्भ भेल तथा पाठ्यक्रममे आधुनिक भाषाक गद्यकँ सेहो राखल जाए लागल तँ पण्डितलोकनिकँ अपन मातृभाषाक बहुविध उन्नति दिसि ध्यान गेलैन्हि। ताबत कालधरि अन्य आधुनिक भारतीय भाषाक उन्नतिक प्रक्रिया बड़ आगाँ बढ़ि चुकल छल। पार्श्ववर्ती भाषा–बंगला ओ हिन्दीक पत्र–पत्रिका प्रकाशित भए रहल छलैक, जकर मिथिलामे प्रचार छल। एहि पत्रिकासबमे गद्यक सएह प्रधानता छलैक। हिन्दीक खड़ी–बोली गद्यकँ ताबत भारतेन्दु हरिश्चन्द साहित्यिक मर्यादा प्रदान कए लोकप्रिय बना चुकल छलाह। ताहू दिसि मिथिलाक संवेदनशील

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

साहित्यकारलोकनिक ध्यान गेलैन्हि। एहि सभक समन्वित प्रभावमे आबि सर्वप्रथम चन्दाझा मैथिली गद्यक प्रयोग कएल अपन 'पुरुषपरीक्षा'क गद्यपद्य–अनुवादमे। एकर प्रकाशन सर्वप्रथम 1898 ई.मे भेल। एहूसँ पूर्व 18मे शताब्दीक अन्तमे ग्रीयरसनक Linguistic Survery of India, vol. vii पृष्ठ संख्या 96क अनुसार –

"The first translation of any portion of the Bible into a Vernacular language of Northern India of which we have any record was made into it (Maithili)" मुदा ओकर पश्चात् सिरामपुर मिशनरी मैथिलीमे कोनो धार्मिक लेखकेँ नहि छपबाओल। अतः अन्य आधुनिक भाषाक गद्यक विकासमे जहन योगदान ईसाईधर्म–प्रचारक संस्थासभ देलक, तेहन मैथिली गद्यक विकासमे नहि।"[1]

आधुनिक काल मे आबि कऽ मैथिली भाषा मे लेखन प्रारंभ कयल गेल अछि। मैथिली मे मौलिक रचना बाद मे शुरु कयल गेल छलैक। ओहि सँ पहिने संस्कृत ग्रंथ सभक अनुवाद मैथिली मे कयल जाइत रहल अछि। कालान्तर मे मिथिलाक महान भाषा–चिंतक लोकनिक सत्प्रयास सँ पूर्णतः मैथिली भाषा मे पोथी आ पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन कराओल जाय लागल। एहि क्रम मे साहित्यक सभ विधा मे रचना आबय लागल। सजग लोकनि आन–आन भाषाक सेहो अध्ययन करय लगलाह आ ओहि भाषा मे लिखल पोथी सभक अनुकरण मैथिली भाषा मे करय लगलाह जकर परिणामस्वरुप मैथिली मे उपन्यास एक नव विधाक रुपमे प्रवेश पओलक आ धीरे–धीरे विस्तार पाबैत गेल। आइ उपन्यासक नामसँ जाहि रचनाकेँ संबोधित कयल जाइत अछि, ओकर इतिहास 108 वर्ष पुरान अछि अर्थात् मैथिली साहित्यमे उपन्यासक प्रवेश डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार पं. जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु' 1914 ई.क रूपमे भेल छल। तहिया मैथिली साहित्यमे उपन्यास एक नव विधाक रूपमे आयल छल मुदा आइ उपन्यासकेँ नव विधा कहब उचित बुझना नहि जाइत अछि। एकर कारण अछि जे ई 108 वर्ष पुरान अछि। जखन कोनो वस्तु 100 वर्षसँ बेसीक भऽ जाइत छैक, तखन ओकर पुरातात्विक महत्व बढ़ि जाइत छैक। एहि दृष्टिसँ मैथिलीक अनेको उपन्यास पुरातात्विक महत्वक भऽ गेल अछि।

जखन मैथिली उपन्यासक अध्ययन करैत छी तखन ज्ञात होइत अछि जे उपन्यासमे दीर्घ कथाक नियोजन कयल जाइत अछि। तेँ उपन्यासकेँ बुझबाक लेल कथाकेँ बुझब आवश्यक अछि आ कथाकेँ बुझबाक लेल गद्यक विकासकेँ बुझब आवश्यक अछि। हम पहिनहि कहि आयल छी जे गद्य–ग्रंथमे 'वर्णरत्नाकर'क बादक कोनो ग्रंथ उपलब्ध नहि अछि। तेँ आधुनिक कालमे कवीश्वर चंदा झा सबसँ पहिने विद्यापतिक संस्कृतमे लिखल नीति विषयक कथाक पोथी 'पुरूष–परीक्षा'क मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कयलाह जाहिसँ एक टा नव बाट प्रशस्त भेलैक आ एकर परिणामस्वरुप अनुवाद करबाक एक टा परंपरा चलि पड़ल। "चन्दाझाक 'पुरुष–परीक्षा'क अनुवादक पश्चात् म. म. मुरलीधरझाक 'मित्रलाभ हितोपदेश' (1906–29), 'महाभारतक अनुशासनपर्व' (1906), बाबू क्षेमधारीसिंहक 'शकुन्तला' (1918), डा. उमेशमिश्रक 'नलोपाख्यान'(1919) ओ 'यक्ष–पाण्डवसंवाद', त्रिलोचनझाक 'उद्योगपर्व', गणनाथझाक 'आदिपर्व'क अनुवाद प्रभृत्तिक चर्चा कएल जा सकैत अछि। एहि अनुवादक परम्परामे पश्चात् जे कार्य भेल से अपेक्षाकृत अधिक सफल भेल। एहि वर्गमे भुवनजीक 'मेघदूत'क, जगदीशमिश्रक 'वाल्मीकीय रामायण'क छेदीझाक 'कादम्बरी'क, जीवनझाक 'नैषध' प्रभृतिक चर्चा कएल जाए सकैत अछि। संस्कृत–कथाक आधारहि पर मौलिक ओ भावानुवादक मध्य–मार्गीय कार्य सेहो भेल अछि। एहि वर्गमे लालदासक 'पतिव्रताचार', म. म. मुरलीधरझाक 'अर्जुनतपस्या', पं. त्रिलोचनझाक 'शकुन्तलोपाख्यान', रामबिहारीमिश्रक अनेक पौराणिक कथा, गंगाधरमिश्रक 'एक प्राचीन समयक राजा शशांकप्रकाश', कुलानन्ददासक 'नलदमयन्ती' आदिक चर्चा होएत। मुदा एहि श्रेणीमे रमानन्दठाकुरक 'संक्षिप्तमहाभारतसार' (1920) ओ प्रो. तन्त्रनाथझाक 'हितोपदेशसार'क विशेष रुपसँ उल्लेख कए सकैत छी।

एहि प्रकारक अनुवाद दृष्टिएँ 1967 ई.मे प्रकाशित प. राजेश्वरझाक 'उर्वशी' ओ 'विद्याधरकथा'क सेहो विशेष रुपसँ उल्लेख कए सकैत छी; कारण, एहि अनुवादमे मैथिली गद्यक स्वभावक रक्षा भेल अछि तथा कथा कहबाक रीतिमे रोचकता आएल। दोसर श्रेणीक आरम्भिक मैथिली कथा–साहित्यक रचना भेल अपेक्षाकृत अधिक मौलिक रीतिएँ उपाख्यान ओ खण्डकाव्य–प्रणालीमे, जाहि मध्य कथा तँ अवश्य संस्कृत–साहित्यसँ लेल गेल अछि मुदा कथाक नियोजना ओ कहबाक रीति कथाकारक मौलिक वस्तु थिक। एहि कोटमे हरिनारायणझाक 'सुदर्शनोपाख्यान' ओ म. म. परमेश्वरझाक 'सीमिन्तनी आख्यायिका' अधिक प्रसिद्ध अछि। एहि श्रेणीमे आधुनिक विकसित गद्य ओ कवित्वपूर्ण शैलीमे रचित प्रो. रमानाथझाक 'उदयनकथा' ओ 'वररुचिककथा'क चर्चा कएल जाएत, जकरा पुरान रीतिक कथा पर आधारित लघु उपन्यास कहि सकैत छी। काव्यानुशासनक 7म ओ 8म सूत्रक टीकाक अनुसार ई खण्डकथा थिक; कारण, ई दुनू कथा 'कथासरितसागर'क प्रसिद्ध वृत्तान्तक आधार पर लिखल गेल अछि ओ मध्यक ओहि ओहि उपाख्यानकेँ नहि लिखल गेल अछि जकर नायकक चारित्रिक विकासक हेतु कोनो आवश्यकता नहि छलैक। स्थान–स्थान पर भावानुवाद भेलहु सन्तोँ ई दुनू लेखकक मौलिक कृति सएह कहल जाए सकैत अछि। एही श्रेणीमे श्रीकृष्ण ठाकुरक 'चन्द्रप्रभा', बाबू तुलापतिसिंहक 'मदनराज–चरितउपन्यास' तथा तेजनाथझाक 'नरोत्तमकथा'क सेहो चर्चा होएत। एतहि श्रीमती जयन्तीदेवीक मिथिलामे प्रचलित व्रत–उपवासादिक कथा–संग्रह 'आराधना' (1971)क सेहो उल्लेख होएत जकरा लेखिका रोचक ओ प्रांजल भाषा–शैलीमे प्रस्तुत कएल अछि। एखन धरि साधारणतः परम्परासँ लोकजिह्वामे जीवित व्यावहारिक एहि रीतिक कथाक संग्रह भए गेलासँ एकटा पैघ अभावक पूर्ति होइत अछि।"[2]

उपरोक्त उद्धरण सँ ज्ञात होइत अछि जे कथा साहित्य सँ उपन्यास साहित्यक जन्म आ विकास भेल अछि।

अन्य साहित्यक प्रभाव

कहल जाइत जे परिवर्त्तन तीन अवस्था मे होइत अछि– प्रभाव मे, अभाव मे आ दवाब मे। ई बात मैथिली साहित्य पर सेहो देखबा मे आबैत अछि। मैथिली साहित्य मे जखन कवीश्वर चंदा झा संस्कृत ग्रंथ 'पुरुष परीक्षा'क मैथिली अनुवाद कयने छलाह तऽ एक टा परिवर्त्तन देखबा मे आयल छल जे अनुवाद कार्य मैथिली साहित्य मे बेसी आ तीव्र गति सँ हुअ लागल छल। हिनका समय मे भारत मे अंग्रजी शासन छल। भारतीय लोक सँ अंग्रेजी लोकक सम्पर्क बढ़ि रहल छल। एहन स्थिति मे स्वाभाविक अछि जे दू संस्कृति आ साहित्यक मिलान वा मिश्रण भऽ जाए आ उएह भेलैक। "जखन यूरोपक संग भारतक सम्पर्क स्थापित भेल तथा भारतीय अंग्रेजीक साहित्य सम्पर्कमे आयलाह तँ भारतीय विविध भाषाक साहित्यकार लोकनि अंग्रेजीक एहि विशिष्ट विधा पर मुग्ध भ' उपन्यास लिखब प्रारम्भ कयलनि। इतिहास एहि तथ्यक साक्षी अछि जे भारतमे सर्वप्रथम बंगला भाषा–भाषी अंग्रेजीक सम्पर्कमे आयलाह। फलतः बंगला साहित्यमे सर्वप्रथम उपन्यास लिखल गेल। बंगलामे रचित उपन्यास भारतीय साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण घटना बनि गेल। मैथिली भाषी प्रबुद्ध समाजक सम्पर्क कलकत्तासँ बनल छल। मैथिली भाषीक रुचि संस्कारमे ई बंगला उपन्यास महत्त्वपूर्ण योगदान देलक। एहने परिस्थितिमे आलोच्यकालमे मैथिलीमे उपन्यास निर्माणक क्रिया प्रारम्भ भेल। 'उपन्यास' शब्द सेहो बंगलाक देन अछि। सर्वप्रथम भूदेव मुखोपाध्याय अंग्रेजी शब्द 'Novel'क लेल 'उपन्यास' शब्दक प्रयोग कयने छलाह। १८६२ इ०मे हिनके कृति सर्वप्रथम 'उपन्यास' नाम धराय प्रकाशित भेल। हिनक ई कृति छल–'ऐतिहासिक उपन्यास।'"[3]

उपरोक्त उद्धरण सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली उपन्यास–साहित्य पर अंग्रेजी साहित्य आ बंगला साहित्यक प्रभाव पड़ल अछि।

उपन्यास शब्दक व्युत्पत्ति –

"उपन्यास दू शब्दक योग सँ बनाओल गेल अछि– उप+न्यास = उपन्यास। अर्थात् सोझामे राखल वस्तु जिकरा पढ़ि कऽ एहन प्रतीत हो जे ई हमरे कथा हो, हमरे शब्द मे लिखल गेल हो।"[4]

उपरोक्त व्युत्पत्ति तऽ सही अछि मुदा ओकर अर्थ भ्रामक बुझना जाइत अछि कारण आइ धरि एकहु टा एहन उपन्यास कोनो भाषा मे नहि लिखल गेल अछि जकरा पढ़ि, सब लोक कहि सकय जे हमरे बात हमरे शब्द मे लिखल अछि। एक अमीर, एक गरीब, एक शिक्षित, एक अनपढ़, एक किसान, एक व्यापारी सब अलग–अलग होइत अछि आ सभक कथा कैं एक संग कऽ कऽ कोनो रचना नहि कयल जा सकैत अछि।

हँ, ई कहल जा सकैत अछि जे उपन्यास एक एहन गद्य विधा अछि जाहि मे मानव–जीवनक चित्रण कयल गेल रहैत अछि। "उपन्यास शब्दक व्युत्पत्ति उप तथा नि पूर्वक अस् धातुमे घञ प्रत्यय जोड़लासँ भेल अछि। अस्क अर्थ होइत अछि प्रक्षेपण करब, राखब, स्थिर करब आदि। एहि प्रकारैं उपन्यास शब्दक व्युत्पत्तिमूलक अर्थ भेल एहन रचना जाहिमे अनेक पक्षक प्रक्षेपण भेल हो, संघटन भेल हो अथवा राखल गेल हो। संस्कृत साहित्यमे उपन्यास शब्दक प्रयोग अनेक ठाम भेल अछि। महाभाष्यमे उपन्यासक अर्थ कथन, भामहक काव्यालंकारमे विन्यास एवं स्थापना, काव्यादर्श तथा साहित्यदर्पणमे स्थापना एवं ज्ञापन एहि विभिन्न अर्थमे उपन्यास शब्दक प्रयोग भेल अछि। अभिज्ञान शाकुन्तलम्मे उपन्यस्त शब्द विन्यस्तक अर्थमे तथा उपन्यास शब्द संदर्भक अर्थमे प्रयुक्त अछि।

एहि प्रकारैं उपन्यास शब्द कथन एवं नियोजन एहि अर्थमे प्रयुक्त भेल मानि लेब उचित होएत कारण कालांतरमे घटनाक नियोजन उपन्यास कहल जाए लागल।"[5]

'उपन्यास' शब्दक व्युत्पत्तिक संबंध मे "गुलाब राय उपन्यासकैं साहित्यक नवीन रूप मानैत छथि। हुनक अनुसार अँगरेजी शब्द नावेल (Novel)मे जकर अर्थ नवीन छैक कथाक तत्त्व भरल छैक। मराठी भाषामे अँगरेजीक एहि शब्दक आधार पर नवल–कथा शब्द गढ़ि लेल गेल अछि। मराठीमे कादम्बरीकैं सेहो उपन्यास कहल जाइंत अछि। उपन्यास शब्द प्राचीन नहि अछि, कम–सँ–कम ओहि अर्थमे जाहिमे आइ–काल्हि एकर व्यवहार होइत अछि। संस्कृत लक्षण–ग्रंथमे उपन्यास शब्द अछि। ई नाटकक सन्धिक एक उपभेद अछि (प्रतिमुख सन्धिक)। एकर व्याख्या दू प्रकारसँ कएल गेल अछि। 'उपन्यासः प्रसादनम्' अर्थात् प्रसन्न कएनिहार रचना उपन्यास कहबैत अछि। दोसर व्याख्या अछि 'उत्पत्ति कृतोह्यर्थ उपन्यासः संकीर्तितः' अर्थात् कोनो अर्थ के युक्ति–युक्त रूपमे उपस्थित करब उपन्यास कहबैत अछि। संभव थिक जे उपन्यासमे प्रसन्नता देबाक शक्ति तथा युक्तियुक्त रूपमे अर्थकैं उपस्थित करबाक प्रवृत्तिक कारणैं एहि प्रकारक कथात्मक रचनाक नाम उपन्यास राखल गेल हो। किन्तु वास्तवमे नाटक साहित्यक उपन्यास शब्द तथा सम्प्रति प्रचलित उपन्यास शब्दमे नाममात्रक समानता अछि। उपन्यासक शब्दार्थ होइछ 'समक्ष राखब'।

उपन्यास शब्दक व्युत्पत्तिमूलक अर्थक विश्लेषण करैत हिन्दी उपन्यासकार किशोरीलाल गोस्वामी 'प्रणयिनी परिणय'क उपोद्घातमे लिखने छथि जे – जाहि प्रकारैं साहित्यक प्रधान अंगमे नाटकक प्रचार पहिने एतहि भेल छल। उपन्यासहुक प्रचार पहिने एतहि भेल मानव अत्युक्ति नहि। परन्तु कोनो महानुभावक कथन छैन्हि जे उपन्यास पूर्व समयमे एतए प्रचलित नहि छल प्रत्युत् अँगरेजीक देखा–देखी लोक नॉवेलक स्थानमे उपन्यासक कल्पना कए लेलक अछि। किंतु ओहि महात्मा लोकनिकैं पहिने एकर मीमांसा कए लेबाक चाहिअन्हि। तात्पर्य ई जे उपन्यास सेहो प्राचीन कालसँ भारतीय साहित्यमे

प्रचलित अछि। दशकूमारचरित, वासवदत्ता, श्रीहर्षचरित, कादम्बरी आदि उपन्यास एकर प्राचीनताक जाज्वल्यमान प्रमाण अछि।

उपन्यास वस्तुतः नवल अर्थात् नवीन एवं टटका साहित्यांग अछि। तथापि जे मेधावी कथा, आख्यायिका आदि शब्दकेँ छोड़ि नॉवेलक लेल उपन्यास शब्दक प्रयोग कएलन्हि ओ प्रशंसनीय छथि। जतए ओ एहि नव शब्दक प्रयोगसँ ई सूचित कएलन्हि जे ई साहित्यांश प्राचीन कथा एवं आख्यायिकासँ भिन्न जातिक अछि ओतए ओकर शब्दार्थ द्वारा (उप = निकट, न्यास = राखब) ई सूचित कएलन्हि जे एहि साहित्यांशक माध्यमसँ ग्रन्थकार पाठकसँ अपन मनक विशेष बात राखए चाहैत छथि।

आधुनिक युगमे उपन्याससँ साहित्यक जाहि रचना प्रभेदक बोध होइत अछि ओकर क्रमिक विकासक इतिहास बनएबाक चेष्टामे भारतीय प्राचीन कथा साहित्यकेँ उपन्यासक प्रारंभिक रूप मानब सत्यक अवहेलना करब होएत। उपन्यास कथा साहित्य अछि एवं कथाक अनेक रूप प्राचीन साहित्यमे भेटैत अछि। कथा कहब ओ सुनब मनुष्यक स्वाभाविक प्रवृत्ति छैक। कथा साहित्यक निर्माण साहित्यक कोनो अन्य विधाक सदृश युगक प्रवृत्ति एवं आवश्यकताक अपेक्षा रखैत अछि। कला जीवनसँ निरपेक्ष कोना रहि सकैत अछि कारण एकर आधार मानव जीवन छैक, एकर पोषण जीवनसँ होइत छैक। अतः एकर प्रभाव जीवन पर पड़ैत छैक।"[6]

महत्त्व

एहि संसार मे जतेक चीज अछि, सभक किछु ने किछु महत्त्व अवश्य अछि। मानव–जीवन मे उपन्यासक महत्त्व निश्चित रुप सँ बुझना जाइत अछि। जेना एहि देह केँ जीवित रखबाक लेल भोजनक आवश्यता अछि, तहिना मस्तिष्क केँ समृद्ध करबाक लेल ज्ञानक आवश्यकता होइत अछि। ज्ञान प्राप्त करबाक लेल विभिन्न प्रकारक सूत्र उपयोग मे आनल जाइत अछि जाहि मे एक टा होइत अछि – पोथी पढ़ब। पोथी पढ़ला सँ ज्ञान राशि मे वृद्धि होइत अछि। विभिन्न प्रकारक उपन्यासक अध्ययन कयला सँ जीवन जीबाक कला मे वृद्धि होइत छैक। विभिन्न प्रकारक जीवनक उदाहरण उपन्यास मे भेटैत छैक। नहि जानि कखन कोन चीज पढ़ि वा देखि जीवन जीबाक दिशा बदलि जाए!

साहित्य सँ चारू पुरुषार्थ – अर्थ, काम, धर्म आ मोक्षक प्राप्ति होइत अछि। तेँ एकर एक टा फराक महत्त्व अछि। अर्थसँ संबंधित पोथीक अध्ययन कएलासँ अर्थक प्राप्ति होइत अछि। काम विषयक ग्रंथ पढ़लासँ कामक पूर्ति होइत अछि। जखन धार्मिक उपन्यासक अध्ययन कएल जाइत अछि, तखन धर्ममे वृद्धि होइत अछि एवं जखन तीनू प्राप्त भए जाइत छैक, तखन मोक्षक मार्ग लोक खोजए लगैत अछि। तेँ एहन समय मे उपन्यासक महत्त्व बेसी भ' जाइत अछि।

संदर्भ सूची :–

1. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ संख्या – 310
2. मैथिली साहित्यक इतिहास – डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ संख्या– 336, 337
3. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. दिनेश कुमार झा, पृष्ठ संख्या – 129
4. www.hindivibhag.com
5. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक, पृष्ठ संख्या – 14
6. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन– डॉ. अमरेश पाठक, पृष्ठ संख्या – 15–16